Airo International Research Journal
Volume XV, ISSN: 2320-3714
March, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

बीसवीं शती के प्रबन्धकाव्यों में छन्द योजना

डॉ॰ ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

हिन्दी कविता बीसवीं शती के प्रारम्भ तक छन्दों की अक्षुण्ण परम्परा - में बंधी रही । लेकिन औद्योगिक, वैज्ञानिक, वैचारिक और साहित्यिक क्षेत्र में सहसा तीव्र परिवर्तन घटित हुए । साहित्य की अनुभूति और अभिव्यक्ति सम्बंधी अनेक परिवर्तनों के साथ छन्द सम्बंधी अवधारणा में भी परिवर्तन हुआ । यांत्रिक भौतिकवाद और वैज्ञानिकता की यह शती मूलत: विद्रोही और प्रतिरोधात्मक हो उठी । इसने कविता के स्वभाव को भी विद्रोही की चेतावनी दी । छन्द मुक्ति का सबसे तीव्र उद्घोष छायावाद के विद्रोही कवि महाप्राण निराला ने किया । बाद में छन्द मुक्ति की यह चेतना इतनी संक्रमित हुई की प्रकृति के चितेरे पंत भी - 'खुल गए छन्द के बन्ध, प्रास के रजत-पाश' कहकर छन्द मुक्ति की वकालत करने लगे । आधुनिक कवि को रूढ़ छन्द बेड़ी मालूम हए । उसने अनुभव किया कि छन्द के परम्परित ढाचें उसकी स्वाधीन अभिव्यक्ति के मार्ग में बाधा है, क्योंकि कवि युगानुरूप नयी स्वाभाविकता के अन्वेषण में जुट गया था । परिणामस्वरूप कवि की गतिमान उर्जा ने छन्द के बन्धन को अस्वीकार कर दिया । लेकिन यहां स्पष्ट कर देना अनिवार्य है कि यह मामला छन्द ढांचों को तोड़ने का था, छन्द को समूचा निरस्त कर देने का नहीं था । निराला ने स्पष्ट कहा था कि 'मुक्त छन्द तो वह है जो छन्द की भूमि में रहकर भी मुक्त है " यानि उनके लिए मुक्तछन्द छन्द की ही नयी संरचना थे । कुछ लोग यह आरोप लगाते हैं कि आधुनिक हिन्दी कविता छन्दविहीन कविता है । वस्तुतः यह एक भ्रम है । बिना छन्द के कविता हो ही नहीं सकती । छन्द कविता का रहस्य है । अज्ञेय के शब्दो में 'छन्द काव्यभाषा की आँख है, भाषा अपने को सुनकर भी काम चला लेती है, काव्य भाषा देख भी लेती । है ।" यदि ध्यान से देख जायें तो छन्द ध्वनियों का संकलन तथा नियमन है । छन्द के द्वारा हम साधारण बोल चाल के गद्य को नियमित करते हैं । "छन्द स्वरों को स्पष्टतर करता है : छन्द भाषा की गति को धीमा करता है क्योंकि स्वरों की मात्रा बढ़ाता है: दीर्घतर स्वर अपनी पूरी अनुगूंज के साथ सामने आते हैं । उनकी सच्ची रंगत पहचानी जाती है । स्वरों की रंगत भावना की रंगत है; अत: छन्द के द्वारा स्वर अर्थ की वृद्धि करते हैं । छन्दमय उक्ति हमें शब्दार्थ भर ही नहीं देती बल्कि रंजना विशिष्ट भावार्थ भी देती है ।"

आज की हिन्दी कविता लय के सहारे अपने को व्यवस्थित करती है । शब्द की लय के साथ-साथ अर्थ की भी एक लय होती है । इसी लय संरचना के द्वारा हम कविता की समग्रता को ग्रहण करते हैं । कविता में अर्थ की लय भी होती है । जिस तरह ध्वनि, ध्वनियों से निर्मित शब्दों के विभिन्न तरह के संयोजन अपने विशिष्ट क्रमों में छन्द में नादात्मकता से शब्द की लय की प्रस्तुति करते हैं उसी तरह अर्थ की विभिन्न इकाइयों से अर्थ की लय संरचना होती है, जो आधुनिक कविता में लय संरचना का आधार

बनती है । वस्तुतः आज की कविता में बुनियादी तौर पर लय का महत्व है । आज का कवि कविता करते समय न तो वर्णों को गिनता है और न ही तुक मिलाने की कोशिश, सिर्फ लय को महत्व देता है । आज के युग की लड़ाई भी यही है कि कवि ढांचे को ध्वस्त करके भी छन्द को जीवित पा लेना चाहता है, क्योंकि छन्द का सार लय है । इसलिए कविता में लय का जीवित रहना प्रकारान्तर से छन्द का ही जीवित रहना है ।

नवीन चेतना के प्रबन्ध काव्यों में लय का विन्यास, अर्थ और भाव विन्यास के अनुरूप है । कवि द्वारा प्रयुक्त, शब्द, शब्दों का पारस्परिक सम्बंध, वस्तुभाव और ध्वनि तरंगों के सांमजस्य या टकराहट से लयात्मक प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास उनकी कलात्मकता की कसौटी है ।

नवीन चेतना के प्रबन्ध काव्यों में प्रयुक्त छन्द

अन्धायुग के संवाद मुक्त छन्दों में है और अन्तराल में कितनी प्रकार की है छन्द योजना से मुक्त वृत्तगन्धी गद्य का भी प्रयोग किया गया है । वृत्तगन्धी गद्य की ऐसी पंक्तियाँ अन्यत्र भी मिल जायेंगी । उक्त कथन से स्पष्ट है कि वृत्तगन्धी गद्य केवल अन्तराल तक सीमित नहीं है, वरन् उसकी व्याप्ति अंकों में प्रयुक्त संवादों तक है । वस्तुतः 'वृत्त या छन्द की गन्ध से युक्त होने के कारण ही उसे वृत्तगन्धी गद्य कहते हैं 13 सच तो यह है कि स्वयं कवि वृत्तगन्धी गद्य में और मुक्त छन्द में कोई स्पष्ट विभाजक रेखा नहीं खींच पाए है । इसके विपरीत अन्तराल में भी मुक्त छन्द जैसी लय वाली पंक्तियाँ मिल जाती है जिससे कथावस्तु में कहीं नीरसता नहीं आती । जहां तक कथागायनों का प्रश्न है, लय और तुकों के समुचित संयोजन द्वारा कवि ने काव्य के शिल्प पक्ष को भी निखारने का प्रयत्न किया है । उदाहरण के लिए निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए -

"संजय का रथ जब नगर द्वार पर पहुँचा / तब रात ढल रही थी /
हारी कौरव सेना कब लौटेगी......... / यह बात चल रही थी /"

यहां दोनों पंक्तियों के अंतिम चार शब्दों की तुकें एक दूसरे से मिलती है उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अन्धायुग के कथागायनों का शिल्प पक्ष उत्कृष्ट है ।

आत्मजयी में छन्द योजना अपना मिश्रित प्रभाव रखती है । कवि की मान्यता है "खड़ी बोली को विरासत में जो छन्द मिले वे पहले ही संस्कृत, ब्रजभाषा और अवधी के स्वभाव में ढल चुके थे । उनमें बंधी कविता में बरबस उन्हीं काव्य परम्पराओं की गन्ध होती हैं - जबरदस्ती किसी नए विचार को पुराने छन्द में कसना उसकी जान लेना भी हो सकता है .... कुछ विषय ऐसे होते हैं जो कविता से स्वतंत्र संगठन की मांग करते हैं जिन्हें कोई बना बनाया छन्द रेडीमेड कपड़ों की तरह पहनाया जा सकता बल्कि जिनके लिए भाषा और छन्दों को दूसरी तरह काटना छांटना पड़ता है । कवि ने आत्मजयी में यही किया है । आत्मजयी में नए-पुराने, छोटे-बड़े, तुकान्त अतुकान्त सभी प्रकार के छन्द परिवर्तित

अपरिवर्तित रूपों में देखे जा सकते है । आत्मजयी में मुख्यतया मुक्त छन्द प्रयुक्त हुआ है किन्तु शब्द और अर्थ की । लयात्मकता सर्वत्र बनी रही है ।

शैल्पिक प्रतिमानों की दृष्टि से शम्बूक एक श्रेष्ठ कृति है । शम्बूक में तुकान्त अतुकान्त दोनों प्रकार के छन्द मिलते हैं । कवि ने शम्बूक की भूमिका में लिखा है "छन्द बद्ध कविता लिखने के संस्कार मुझमें पहले से रहे हैं, मुक्त छन्द की भूमि पर । मुझे निराला और नयी कविता ने ला दिया । इस काव्य में दोनों को देखकर किसी को आश्चर्य हो तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा । कुछ दूर तक मैंने इस रचना को गुप्त जी के भाव से अवशिष्ट होकर लिखा है ।" स्पष्ट है कि कवि पर पूर्ववर्ती काव्यों का प्रभाव रहा है । यही कारण है शम्बूक में कहीं-कहीं तुकान्त छन्द भी प्रयुक्त हुआ है

समग्रतः नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्यों पर विचार किया जाए तो ऐसा लगता | है कि इनकी आत्मा मुक्तछंदीय है । अभिव्यंजना प्रणाली की दृष्टि से प्रवाद पर्व, संशय की एक रात, कनुप्रिया, आत्मदान आदि सभी कृतियाँ मुक्तछन्द का प्रभाव रखती है । मुक्त छन्द में वैविध्य की कहीं अधिक संभावना होती है । संभवत: इसी कारण इन कवियों ने मुक्त छंद के आग्रह को स्वीकार किया है ।

संदर्भ सूची --

1. अज्ञेय : भवन्ती, राजपाल एंड संस, दिल्ली 1972 पृष्ठ – 23
2. वही
3. संजीव कुमार, अन्धायुग, निकष पर, संजीव प्रकाशन, कुरुक्षेत्र 1987 पृष्ठ - 131
4. धर्मवीर भारती, अंधायुग, किताब महल-15, इलाहाबाद 1993, पृष्ठ - 39
5. जगदीश गुप्त : शम्बूक, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 1990 पृष्ठ – 15

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

डॉ. ओमप्रकाश